Prof. Khushbu kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, Lnmu

Class - B.A - I (H)
Paper - II

Topic - गांधीजी के सामाजिक विचार

समाज सुधार के क्षेत्र में गांधीजी के विचार और कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। गांधीजी का विचार था कि जीवन एक समग्र इकाई है और हम उसे राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक, आदि भागों में नहीं बांट सकते। अतः समाज सुधार का काम राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ चलना चाहिए। गांधीजी के सामाजिक विचारों की कुछ प्रमुख बातें इस प्रकार हैं —
(1) वर्ण व्यवस्था (2) अस्पृश्यता का अन्त (3) साम्प्रदायिक एकता (4) स्त्री सुधार और (5) बुनियादी शिक्षा।

(1) वर्ण व्यवस्था — वर्ण व्यवस्था को सामान्यतः हिन्दू सामाजिक जीवन का एक दोष समझा जाता है और अनेक विद्वानों ने इसके पूर्णतया उन्मूलन की बात कही है। लेकिन गांधीजी वर्ण व्यवस्था को बनाये रखने के समर्थक हैं और उनका विचार है कि इसका आधार जन्म ही होना चाहिए, कर्म नहीं। उनका कहना था कि वर्ण व्यवस्था एक वैज्ञानिक व्यवस्था और वंशानुक्रम का नियम एक शाश्वत नियम है। मनुष्यों के द्वारा पैतृक कार्य छोड़ देने पर सारी अव्यवस्था फैल जायेगी। किन्तु इसके साथ ही उनका विचार था कि सामाजिक महत्व

की दृष्टि से सभी कार्य समान हैं और किसी कार्य को या उसके करने वाले को छोटा नहीं समझा जाना चाहिए।

(2) अस्पृश्यता का अन्त — अस्पृश्यता या छुआछूत भारतीय समाज की एक सबसे बड़ी बुराई रही है। गांधीजी अस्पृश्यता को भारतीय समाज के लिए एक कलंक मानते थे। वे अछूतों को समान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकार दिलाने के पक्ष में तो थे ही, उनके द्वारा सबसे अधिक जोर इस बात पर दिया गया कि अछूतों को भी सवर्ण हिन्दुओं के समान मन्दिर प्रवेश और पूजा का अधिकार मिलना चाहिए। गांधीजी ने सवर्ण हिन्दुओं और अछूतों के बीच विवाह सम्बन्ध तथा गोद लेने के सम्बन्ध स्थापित करने पर बल दिया।

(3) साम्प्रदायिक एकता — सामाजिक क्षेत्र में गांधीजी का एक प्रमुख आदर्श भारत के सभी सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में आबद्ध करना था। उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता पर बहुत जोर दिया और मि. जिन्ना के 'द्विराष्ट्र सिद्धान्त' को मानने के लिए कभी तैयार नहीं हुए। गांधीजी का कहना था कि धर्म को राष्ट्रीयता का आधार नहीं माना जा सकता। उन्होंने अन्त तक भारत के विभाजन का विरोध किया। वे सभी धर्मों

को समान समझते थे और उन्होंने साम्प्रदायिक एकता को बनाये रखने का भरसक प्रयत्न किया।

(4) स्त्री सुधार — गांधीजी के अनुसार स्त्रियां किसी भी दृष्टि से पुरुषों से हीन नहीं होती और कमजोर कहना उनके प्रति अन्याय और उनका अपमान है। उनका कथन था कि यदि सत्य अहिंसा, सहिष्णुता और नैतिकता, आदि जीवन के सर्वोच्च गुणों की दृष्टि से विचार किया जाय तो स्त्रियां पुरुषों से भी श्रेष्ठ हैं। उन्होंने पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह देवदासी प्रथा जैसी बुराईयों का विरोध किया।

(5) बुनियादी शिक्षा — देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए गांधीजी के द्वारा एक नवीन शिक्षा प्रणाली का सुझाव दिया गया, जो 'बुनियादी शिक्षा' के नाम से प्रसिद्ध है। इस शिक्षा प्रणाली की निम्नलिखित विशेषताएं हैं—

(1) शिक्षा के अन्तर्गत प्रत्येक विद्यार्थी को मूलरूप में कोई-न कोई दस्तकारी सिखायी जानी चाहिए और सभी विषयों की शिक्षा उस दस्तकारी के द्वारा दी जानी चाहिए जिसे 'सहसम्बन्ध का सिद्धान्त' कहते हैं।
(2) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
(3) शिक्षा स्वावलम्बी हो।

Khushbu Kumari
24th Aug. 2020